idara

छः नम्बर की मेहनत

ईमान | नमाज़ | इकराम मुस्लिम | इल्म व ज़िक्र
इख़लास निय्यत | दावत व तबलीग

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब
कान्धलवी दामत बरकातहुम

मुरत्तब : मौलाना मोहम्मद इलियास "कासमी"

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

मज़मून	सफ़्हा
1. एक अहम उसूल (हज़रत मौलाना मुहम्मद उ़मर पालन पूरी रह०)	6
2. छः नम्बर क्या हैं। (मौलाना मुहम्मद सअ़द कांधलवी)	10
3. ईमान	27
4. नमाज़	33
5. इल्म	41
6. ज़िक्र	47
7. इक्रामे मुस्लिम	50
8. इख़्लासे निय्यत	53
9. दावत व तब्लीग़	56
10. गश्त के उसूल, मक़्सद और मेहनत	103
11. तालीम के उसूल, मक़्सद और मेहनत	109
12. अल्लाह के रास्ते में जाने वालों को हिदायात	112
13. तक़्वा किसे कहते हैं।	120
14. काएनाती नक़्शे	132

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

छः नम्बर

यह 6 नम्बर हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के हैं।

जिन्हें हज़रत मौलाना सअ्द साहब ने पढ़कर सुनाया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ.

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! अ़र्ज़ यह करना है कि इस दावत व तब्लीग़ से क्या चाहा जा रहा है? यह हमारा और आपका आज मुज़ाकरा है। हम इस मुज़ाकरे के लिए जमा हुए हैं। अब इन्तिहाई ग़ौर और तवज्जोह से काम को समझना है।

मेरे दोस्तो! मेहनत हर एक आदमी कर रहा है पर हर एक मेहनत में कामियाब नहीं है, मेहनत में वह आदमी कामियाब है जिसकी मेहनत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मेहनत से मेल खाये। इसलिए लाज़िम है यह बात, कि इस दावत की मेहनत में मिज़ाजे नुबुव्वत हो।

इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह के फ़ज़्ल से काम हो रहा है। लेकिन कमी इस बात की है कि कारे

www.islamicbookbazar.com
ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

नुबुव्वत अभी मिज़ाजे नुबुव्वत से ख़ाली है। मिज़ाजे नुबुव्वत इस काम में यह है कि जितना काम करने को कहा जाये, उतना ही किया जाये और जिस तरह करने को बतलाया जाये उसी तरह किया जाये। इसे कहते हैं मिज़ाजे नुबुव्वत।

मेरे दोस्तो! अगर काम ख़्वाहिश या अपने मिज़ाज पर ले जाया जाये तो ग़ैबी नुसरतें नहीं आऐंगी। क्योंकि ग़ैबी नुसरतों का तअ़ल्लुक़ मिज़ाजे नुबुव्वत से है। जितना काम के अन्दर मिज़ाजे नुबुव्वत होगा, उसी के बक़द्र अल्लाह की ताईद और ग़ैबी नुसरतें साथ में होंगी। दोस्तो! काम होगा अल्लाह की ताईद और ग़ैबी नुसरतों से, काम बयान और तक़रीर से नहीं होगा। इसलिए ज़रूरी है यह बात कि काम को मिज़ाजे नुबुव्वत के साथ करें।

असल में इस सारी मेहनत का ख़ुलासा यह है कि अपने अन्दर इन 6 नम्बरों की हक़ीक़तों को दावत के रास्ते से उतारना है। इन 6 नम्बरों में हर नम्बर के साथ तीन तीन मेहनतें हैं। हर नया, हर पुराना इन मेहनतों के किए बग़ैर, इन नम्बरों की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता। इन्हीं मेहनतों को समझ कर करने के लिए, यह हमारा और आपका मुज़ाकरा है। इन मेहनतों को जिस तरह करने के लिए और जितना करने के लिए आप से अ़र्ज़ किया जा रहा है। उस तरह से करना यह मिज़ाजे नुबुव्वत है। अब हर नम्बर के साथः-

पहला कामः दावत देना, दूसरा कामः मश्क़ करना, तीसरा कामः दुआ़ मांगना।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! यह दावत क्यों दी जाती है और दावत देने का मक़्सद क्या है?

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

हज नहीं कर सकते, क्योंकि हज अ़मल है, माल सबब है। लेकिन यह कहना कि अस्बाब होंगे तो यक़ीन होगा, नहीं यह कहना सही नहीं, कि अस्बाब का यक़ीन का कोई जोड़ नहीं है। इसलिए, मेरे दोस्तो! हर नबी ने आकर सब से पहली जो दावत दी है वह ईमान की दावत दी है। हर नबी ने अपनी क़ौम को,

अस्बाब से ईमान की तरफ़
और
चीज़ों से आमाल की तरफ़

दावत दी है यानी किसी सबब से, किसी नक़्शे से और किसी शक्ल से कुछ नहीं बनता। जो भी इन शक्लों से जो ज़मीन आसमान के दरमियान फैली हुई हैं इन शक्लों से जो कुछ निकलता हुआ हमें नज़र आ रहा है या यह जो शक्लों में से चीज़ें बन कर निकलती हुई हमें नज़र आ रही हैं, ये चीज़ें इन शक्लों में नहीं बनतीं और न ही इन शक्लों के अन्दर जो ख़ुदा का अम्र काम कर रहा है उस से कुछ बनता है बल्कि यह सब अल्लाह की ज़ात से बना है और सातवें आसमान के ऊपर अ़र्श से मिला हुआ जो ग़ैबी ख़ज़ाना है, जिस का दरवाज़ा न रात को बन्द होता है न दिन में, उस ख़ज़ाने से बराहे रास्त इन शक्लों के अन्दर से निकलने वाली चीज़ें अल्लाह उतार रहे हैं, ख़ुद अल्लाह जल्ल शानुहू कह रहे हैं। कि

खेती में ग़ल्ला हम उतारते हैं। (क़ुरआन)

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

अदा न करके, तू भी इस नमाज़ी को ज़ाए कर दे, तो फिर यह नमाज़ पुराने कपड़े की तरह लपेट कर, उस नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है। इस तरह हदीस में यह भी आता है कि क़ब्र में नमाज़ी आदमी के सर की जानिब नमाज़ मौजूद होगी और क़यामत में जब नमाज़ी आदमी अल्लाह के सामने हिसाब देने के लिए खड़ा होगा तो यह नमाज़ मीज़ान पर अपने वज़न की तौल करा रही होगी। यह नमाज़ की हक़ीक़त हुज़ूर सल्ल० मेराज से वापसी पर अपने साथ ले कर आए थे। इस लिए जब तुम नमाज़ की दावत दो, तो नमाज़ की हक़ीक़त को सामने रख कर दावत दो उस बेनमाज़ी को सामने रख कर दावत न दो। बल्कि नमाज़ के ख़ुशू को नमाज़ के ख़ुज़ू को नमाज़ की हक़ीक़त को और सिफ़ते एहसान को सामने रखकर दावत दो, कि तुम अल्लाह को देख रहे हो, या कम से कम इस यक़ीन के साथ कि अल्लाह हमें देख रहे हैं।

मेरे दोस्तो! इन चन्द चीज़ों को सामने रखकर नपाज़ की दावत दो। क्योंकि ख़ुद दावत देने वाला अपने अन्दर नमाज़ की हक़ीक़त लाना चाहता है, इस वजह से नमाज़ की दावत दे रहा है लेकिन हमारे गश्त बे नमाज़ियों में हो रहे हैं बे नमाज़ियों को सामने रखकर, इसलिए हमारी नमाज़ों में कोई तरक़्क़ी नहीं, हमारी तालीम हो रही है इसके लिए जो नमाज़ नहीं पढ़ रहे, इस लिए तालीम से अपनी ज़ात को फ़ायदा नहीं। इसलिए नमाज़ की हक़ीक़त को समाने रखकर दावत दो। नमाज़ से मिलने वाले नफ़े जो दुनिया में मिलेंगे जब तक हम यहां हैं, और आख़िरत में जो नफ़े मिलेंगे वहां जाने पर, उन नफ़ों को ख़ूब समझाओ, हुज़ूर स० और सहाबा वाली नमाज़ को सुनाना कि किस तरह

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store